International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वर्धमान ग्रंथागार, जैन विश्व भारती संस्थान की जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन में विशेष भूमिका: एक अध्ययन

श्रीमती लाजवंती जैन[1], डॉ. योगेन्द्र सिंह[2]

[1]शोधकर्त्री, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़ (राजस्थान)
[2]शोध निर्देशक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़ (राजस्थान)

सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य **जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ** स्थित **वर्धमान ग्रंथागार** की जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक विकास में भूमिका का अध्ययन एवं मूल्यांकन करना है। वर्धमान ग्रंथागार जैन आगम, प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी एवं भारतीय संस्कृति से संबंधित समृद्ध साहित्य, दुर्लभ पाण्डुलिपियों, शोध-प्रबंधों तथा आधुनिक सूचना संसाधनों का प्रमुख केन्द्र है। यह ग्रंथागार अध्ययन, अनुसंधान, नैतिक मूल्यों के संवर्धन तथा आध्यात्मिक जागरूकता के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। इस अध्ययन में **मिश्रित शोध पद्धति (Mixed Research Method)** का प्रयोग किया गया। प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु संरचित प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष अवलोकन का उपयोग किया गया, जबकि द्वितीयक स्रोतों के रूप में पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों तथा संस्थागत अभिलेखों का अध्ययन किया गया। अध्ययन में वर्धमान ग्रंथागार के **400 नियमित उपयोगकर्ताओं** को प्रतिदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण **प्रतिशत (Percentage), माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) तथा क्रिटिकल रेशियो (Critical Ratio)** के माध्यम से किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि वर्धमान ग्रंथागार जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक विकास में प्रभावी भूमिका निभा रहा है। ग्रंथागार की समृद्ध संग्रह-संपदा, पाण्डुलिपि संरक्षण, डिजिटल सेवाएँ, शोध-अनुकूल वातावरण तथा उपयोगकर्ता-केंद्रित सेवाएँ विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों, साधु-साध्वियों एवं अन्य उपयोगकर्ताओं के ज्ञान-विस्तार, अध्ययन-अभिरुचि, नैतिक मूल्यों तथा आध्यात्मिक चेतना को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। सांख्यिकीय विश्लेषण से अधिकांश परिकल्पनाएँ समर्थित पाई गईं, जिससे यह सिद्ध होता है कि वर्धमान ग्रंथागार केवल ज्ञान-संसाधनों का केन्द्र ही नहीं, बल्कि जैन ज्ञान-परम्परा के संरक्षण, मूल्यपरक शिक्षा के संवर्धन तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अतः यह अध्ययन विशेष ग्रंथालयों की उपयोगिता एवं महत्त्व को रेखांकित करता है तथा यह प्रतिपादित करता है कि पारम्परिक ज्ञान-संपदा को आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के साथ समन्वित कर ऐसे ग्रंथालय भविष्य के ज्ञान-समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

मुख्य शब्द — वर्धमान ग्रंथागार, जैन धर्म, वैचारिक विकास, आध्यात्मिक विकास, जैन विश्व भारती संस्थान, विशेष ग्रंथालय, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान।

प्रस्तावना

मानव सभ्यता का विकास ज्ञान, अनुभव एवं सांस्कृतिक चेतना के संरक्षण तथा संवर्धन पर आधारित रहा है। इस प्रक्रिया में पुस्तकालयों ने सदैव ज्ञान के संग्रह, संरक्षण, संगठन एवं प्रसार के प्रमुख केन्द्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुस्तकालय केवल पुस्तकों के संग्रह का स्थान नहीं हैं, बल्कि वे शिक्षा, अनुसंधान, संस्कृति तथा नैतिक मूल्यों के संरक्षण और विकास की आधारभूत संस्थाएँ हैं। वे अतीत की ज्ञान-परम्पराओं को वर्तमान से जोड़ते हुए भविष्य के ज्ञान-सृजन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। भारतीय ज्ञान-परम्परा विश्व की प्राचीन एवं समृद्ध ज्ञान-परम्पराओं में से एक है। वैदिक, बौद्ध एवं जैन परम्पराओं में ग्रंथों एवं ग्रंथालयों के माध्यम से ज्ञान का संरक्षण एवं प्रसार किया जाता रहा है। नालन्दा, तक्षशिला एवं विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों के विशाल ग्रंथालय इस समृद्ध परम्परा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसी परम्परा में जैन धर्म का विशेष स्थान है, जिसने अहिंसा, सत्य, अनेकान्तवाद, अपरिग्रह एवं आत्मसंयम जैसे मानवीय मूल्यों को साहित्य एवं ग्रंथों के माध्यम से सुरक्षित रखा। जैन धर्म की साहित्यिक परम्परा अत्यंत समृद्ध है। जैन आचार्यों द्वारा रचित आगम, दर्शन, तत्त्वग्रंथ, प्राकृत, संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य भारतीय सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य धरोहर हैं। इन ग्रंथों के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार में जैन ग्रंथालयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के युग में विशेष ग्रंथालय पारम्परिक ज्ञान-संपदा के संरक्षण के साथ-साथ डिजिटल सूचना सेवाओं द्वारा शोध एवं अध्ययन को भी सुदृढ़ आधार प्रदान कर रहे हैं। इसी संदर्भ में जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ का वर्धमान ग्रंथागार विशेष महत्व रखता है। यह ग्रंथागार जैन धर्म, दर्शन, प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति से संबंधित समृद्ध पुस्तकों, दुर्लभ पाण्डुलिपियों, शोध-प्रबंधों एवं डिजिटल संसाधनों का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ उपलब्ध श्रुत-सन्निधि कक्ष, पाण्डुलिपि संरक्षण व्यवस्था, डिजिटल लाइब्रेरी, **OPAC, SOUL आधारित पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली तथा शोध-सहायता सेवाएँ इसे आधुनिक** एवं परम्परागत पुस्तकालय व्यवस्था का उत्कृष्ट उदाहरण बनाती हैं। यह ग्रंथागार विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों, साधु-साध्वियों एवं अन्य उपयोगकर्ताओं के ज्ञान-विस्तार, अनुसंधान, नैतिक विकास तथा आध्यात्मिक उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। यद्यपि जैन धर्म, जैन साहित्य एवं पुस्तकालय विज्ञान पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, किन्तु वर्धमान ग्रंथागार की उपयोगकर्ता-आधारित सेवाओं तथा जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक विकास में उसकी भूमिका का वैज्ञानिक अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के उद्देश्य से प्रस्तुत शोध किया गया है।

इस अध्ययन में वर्धमान ग्रंथागार के 400 नियमित उपयोगकर्ताओं से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण कर यह मूल्यांकन किया गया है कि ग्रंथागार की संग्रह-संपदा, सूचना सेवाएँ, शोध-सुविधाएँ एवं उपयोगकर्ता सेवाएँ जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक विकास में किस प्रकार योगदान देती हैं। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण **प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा क्रिटिकल रेशियो (CR)** जैसी सांख्यिकीय तकनीकों द्वारा किया गया है।

अतः प्रस्तुत शोध वर्धमान ग्रंथागार की भूमिका का वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रस्तुत करते हुए यह प्रतिपादित करता है कि विशेष ग्रंथालय केवल ज्ञान-संसाधनों के केन्द्र नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान-परम्परा के संरक्षण, मूल्यपरक शिक्षा के संवर्धन तथा जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक विकास के प्रभावी माध्यम भी हैं। यह अध्ययन पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान तथा जैन अध्ययन के क्षेत्र में उपयोगी योगदान प्रदान करता है।

शोध के उद्देश्य—

1. जैन धर्म के उद्भव एवं विकास में साहित्य एवं प्राच्य ग्रंथ भण्डारण परम्परा का अध्ययन।
2. जैन विश्व भारती संस्थान के वर्धमान ग्रंथागार के प्रबंधन एवं कार्यप्रणाली का अध्ययन।
3. जैन धर्म के वैचारिक उन्नयन में जैन विश्व भारती संस्थान के वर्धमान ग्रंथागार की भूमिका का अध्ययन।
4. जैन धर्म के आध्यात्मिक उन्नयन में जैन विश्व भारती संस्थान के वर्धमान ग्रंथागार की भूमिका का अध्ययन।

शोध की आवश्यकता एवं औचित्य— आधुनिक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के युग में यह आवश्यक हो गया है कि इस ग्रंथागार की सेवाओं, संसाधनों और उपयोगिता का वैज्ञानिक मूल्यांकन किया जाए तथा यह जाना जाए कि यह जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन में किस प्रकार योगदान दे रहा है। इसी कारण प्रस्तुत शोध आवश्यक और औचित्यपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल वर्धमान ग्रंथागार की भूमिका को रेखांकित करता है, बल्कि जैन ज्ञान-परम्परा के संरक्षण, डिजिटलीकरण और भविष्य की ग्रंथालय सेवाओं के विकास हेतु भी उपयोगी सुझाव प्रदान करता है।

शोध का महत्व— प्रस्तुत शोध का महत्व इस तथ्य में निहित है कि इससे वर्धमान ग्रंथागार की जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हुई। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि ग्रंथागार की संग्रह-संपदा, सेवाएँ एवं शोध-सुविधाएँ उपयोगकर्ताओं के ज्ञान, शोध एवं आध्यात्मिक चेतना के विकास में सकारात्मक योगदान देती हैं। सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा सभी परिकल्पनाओं की पुष्टि होने से शोध की विश्वसनीयता सिद्ध हुई तथा यह अध्ययन जैन अध्ययन एवं पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में एक उपयोगी संदर्भ के रूप में महत्वपूर्ण है।

शोध पद्धति और प्रकृति— अध्ययन **वर्णनात्मक (Descriptive), विश्लेषणात्मक (Analytical) एवं अनुभवजन्य (Empirical)** शोध की प्रकृति पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य केवल वर्धमान ग्रंथागार की संग्रह-संपदा एवं सेवाओं का विवरण प्रस्तुत करना नहीं था, बल्कि यह वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण करना था कि यह ग्रंथागार जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन में किस प्रकार योगदान दे रहा है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार की शोध पद्धतियों का समन्वित उपयोग किया गया, जिससे अध्ययन के निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय एवं प्रमाणिक बन सके। अध्ययन में **मिश्रित शोध अभिकल्प (Mixed Research Design)** अपनाया गया। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों से तथ्य संकलित किए गए। तथ्य संकलन हेतु **प्राथमिक स्रोतों** के अंतर्गत प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष अवलोकन का उपयोग किया गया, जबकि **द्वितीयक स्रोतों** में पुस्तकें, शोध-प्रबंध, शोध-पत्र, जर्नल, वार्षिक प्रतिवेदन, ग्रंथागार अभिलेख तथा संस्थान के प्रकाशित दस्तावेजों का उपयोग किया गया।

अध्ययन क्षेत्र— अध्ययन का क्षेत्र **वर्धमान ग्रंथागार, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ (राजस्थान) है।** यह ग्रंथागार जैन आगम, प्राकृत साहित्य, संस्कृत ग्रंथ, हिन्दी साहित्य, दुर्लभ पाण्डुलिपियों, शोध-प्रबंधों तथा आधुनिक सूचना संसाधनों का एक प्रमुख राष्ट्रीय केन्द्र है।

समग्र एवं प्रतिदर्श— अध्ययन की **समग्र (Population)** में वर्धमान ग्रंथागार के नियमित उपयोगकर्ताओं को सम्मिलित किया गया। इसमें **150 विद्यार्थी, 50 शिक्षक एवं शोधार्थी, 50 साधु-साध्वी एवं समणी तथा 150 श्रावक-श्राविकाएँ एवं अन्य नियमित उपयोगकर्ता** शामिल थे। इस प्रकार समग्र की **कुल संख्या 400** थी।

चूँकि समग्र का आकार सीमित एवं अध्ययन के लिए उपयुक्त था, इसलिए **समग्र के सभी 400 उपयोगकर्ताओं को ही प्रतिदर्श (Sample)** के रूप में शामिल किया गया। अध्ययन में प्राप्त इन 400 उत्तरदाताओं के आधार पर संपूर्ण सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया।

तथ्य संकलन के उपकरण— अध्ययन में तथ्य संकलन हेतु **संरचित प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष अवलोकन** का उपयोग किया गया। प्रश्नावली में पुस्तकालय उपयोग, संग्रह, सेवाएँ, शोध-सुविधाएँ तथा जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक विकास से संबंधित प्रश्न सम्मिलित थे। ग्रंथपाल, शिक्षक, शोधार्थियों एवं उपयोगकर्ताओं के साक्षात्कार लिए गए तथा ग्रंथागार की व्यवस्था एवं सेवाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया।

तथ्य विश्लेषण की तकनीक— प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण **प्रतिशत (Percentage), माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) तथा क्रिटिकल रेशियो (Critical Ratio)** के माध्यम से किया गया। इन सांख्यिकीय विधियों द्वारा परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण—

तालिका – 1 : धर्म के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

धर्म	संख्या	प्रतिशत
जैन	200	50
अन्य धर्म	200	50
कुल	**400**	**100**

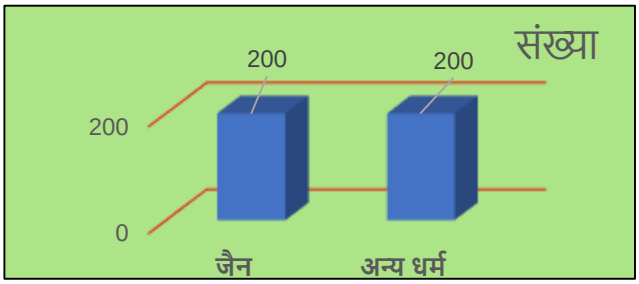

विश्लेषण— तालिका–1 में कुल **400 उत्तरदाताओं** को सम्मिलित किया गया, जिनमें **200 (50%) उत्तरदाता जैन धर्म** तथा **200 (50%) उत्तरदाता अन्य धर्म** से संबंधित थे। दोनों समूहों की समान संख्या होने के कारण अध्ययन में तुलनात्मक विश्लेषण संतुलित एवं निष्पक्ष रूप से किया जा सका। समान प्रतिदर्श आकार (Equal Sample Size) सांख्यिकीय विश्लेषण की विश्वसनीयता को बढ़ाता है तथा दोनों समूहों के मध्य प्राप्त अंतर को अधिक वस्तुनिष्ठ रूप से समझने में सहायता करता है। इससे शोध की परिकल्पनाओं का परीक्षण अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सका। अतः धर्म के आधार पर उत्तरदाताओं का समान वितरण इस अध्ययन की वैज्ञानिकता को सुदृढ़ करता है।

तालिका – 2 : उत्तरदाताओं का आयु स्तर

आयु स्तर	आयु (वर्ष)
न्यूनतम आयु	17
अधिकतम आयु	75
औसत आयु	35

विश्लेषण— तालिका–2 के अनुसार अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की न्यूनतम आयु 17 वर्ष, अधिकतम आयु 75 वर्ष तथा औसत आयु 35 वर्ष रही। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन में किशोर, युवा, प्रौढ़ एवं वरिष्ठ आयु वर्ग के उपयोगकर्ताओं को सम्मिलित है। विभिन्न आयु वर्गों के प्रतिनिधित्व के कारण अध्ययन के निष्कर्ष अधिक व्यापक एवं प्रतिनिधित्वपूर्ण बने। विभिन्न आयु समूहों के उपयोगकर्ताओं के विचारों को सम्मिलित करने से वर्धमान ग्रंथागार की सेवाओं तथा जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक प्रभाव का समग्र मूल्यांकन संभव हुआ।

तालिका – 3 : उत्तरदाताओं का अंक स्तर

विवरण	मान
न्यूनतम स्कोर	143
अधिकतम स्कोर	248
माध्य (Mean)	219
मानक विचलन (SD)	22

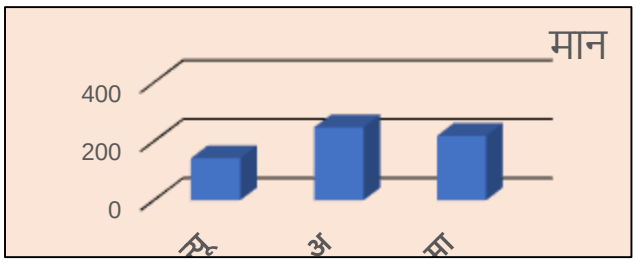

विश्लेषण— तालिका – 3 में उत्तरदाताओं का न्यूनतम स्कोर 143, अधिकतम स्कोर 248, माध्य 219 तथा मानक विचलन 22 प्राप्त हुआ। न्यूनतम एवं अधिकतम स्कोर के मध्य 105 अंकों का अंतर पाया गया, जिससे उत्तरदाताओं के विचारों में विविधता का संकेत मिलता है। यद्यपि उत्तरों में कुछ भिन्नता रही, फिर भी माध्य 219 तथा मानक विचलन 22 यह दर्शाते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं के अंक औसत के आसपास केंद्रित थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन से प्राप्त आँकड़े संतुलित, विश्वसनीय एवं सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए उपयुक्त हैं।

तालिका–4 : लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

लिंग	संख्या	प्रतिशत
महिला	290	72.5
पुरुष	110	27.5
कुल	**400**	**100**

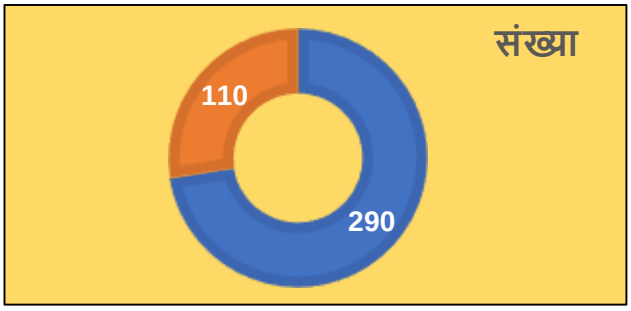

विश्लेषण— तालिका–4 के अनुसार अध्ययन में कुल 400 उत्तरदाताओं में से 290 (72.50%) महिलाएँ तथा 110 (27.50%) पुरुष थे। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन में महिला उत्तरदाताओं की भागीदारी अधिक रही। महिलाओं की अधिक सहभागिता से अध्ययन में उनके विचारों एवं अनुभवों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ। इससे वर्धमान ग्रंथागार की सेवाओं, संसाधनों तथा जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक प्रभाव के संबंध में प्राप्त निष्कर्ष अधिक व्यापक एवं उपयोगी बने। साथ ही यह भी इंगित होता है कि ग्रंथागार की सेवाओं का उपयोग महिला वर्ग द्वारा सक्रिय रूप से किया जा रहा है।

तालिका–5 : जैन पुरुष एवं जैन महिला उत्तरदाताओं का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	सारणी मान (.05)	C.R. मान	निर्णय
जैन पुरुष	71	221.3	17.7	1.97	2.74	सार्थक
जैन महिला	129	212.97	24.91	1.97	2.6	सार्थक

$$df = N_1 + N_2 - 2 = 198$$

विवरण— तालिका -5 में 71 जैन पुरुष एवं 129 जैन महिला उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया। जैन पुरुषों का माध्य (Mean) 221.30 तथा जैन महिलाओं का माध्य 212.97 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के माध्य में 8.33 अंकों का अंतर पाया गया, जो यह दर्शाता है कि जैन पुरुषों का जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक पक्षों के प्रति ज्ञान एवं अभिरुचि का स्तर महिलाओं की तुलना में कुछ अधिक पाया गया। मानक विचलन (Standard Deviation) के आधार पर जैन पुरुषों का SD 17.70 तथा जैन महिलाओं का SD 24.91 प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि पुरुष उत्तरदाताओं के उत्तर अपेक्षाकृत अधिक एकरूप (Consistent) थे, जबकि महिला उत्तरदाताओं के उत्तरों में अपेक्षाकृत अधिक विविधता (Variation) पाई गई। सांख्यिकीय परीक्षण में प्राप्त C.R. मान (2.74 एवं 2.60) सारणी मान 1.97 से अधिक है। अतः दोनों समूहों के मध्य पाया गया अंतर 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक (Statistically Significant) है। इससे

यह निष्कर्ष निकलता है कि जैन पुरुष एवं जैन महिला उत्तरदाताओं के जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान स्तर में महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है।

तालिका –6 : कुल पुरुष एवं कुल महिला उत्तरदाताओं के ज्ञान स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	C.R. मान	सारणी मान (.05)	निर्णय
पुरुष	110	224.06	17.82	3.35	1.96	सार्थक
महिला	290	216.89	22.18	3.35	1.96	सार्थक

$df = N_1 + N_2 - 2 = 398$

विवरण— तालिका -6 में **110 पुरुष** तथा **290 महिला** उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया। पुरुष उत्तरदाताओं का **माध्य (Mean) 224.06** तथा महिला उत्तरदाताओं का **माध्य 216.89** प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के माध्यों में **7.17 अंकों का अंतर** पाया गया, जो यह संकेत करता है कि पुरुष उत्तरदाताओं का ज्ञान स्तर महिलाओं की अपेक्षा कुछ अधिक पाया गया।मानक विचलन (Standard Deviation) के आधार पर पुरुषों का **SD = 17.82** तथा महिलाओं का **SD = 22.18** प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि पुरुष उत्तरदाताओं के उत्तर अपेक्षाकृत अधिक एकरूप (Consistent) रहे, जबकि महिला उत्तरदाताओं के उत्तरों में अपेक्षाकृत अधिक विविधता (Variation) पाई गई।सांख्यिकीय परीक्षण में प्राप्त **C.R. मान 3.35** है, जो **0.05 स्तर के सारणी मान 1.96** तथा **0.01 स्तर के सारणी मान 2.58** दोनों से अधिक है। इससे यह सिद्ध होता है कि पुरुष एवं महिला उत्तरदाताओं के ज्ञान स्तर में पाया गया अंतर **1% स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक (Statistically Significant)** है।

सभी 6 परिकल्पनाओं का प्रश्न वार समेकित सार

क्र.	शोध की परिकल्पना	Mean	SD	%	निष्कर्ष
1	जैन धर्म के उद्भव एवं विकास में साहित्य तथा प्राच्य ग्रंथ भण्डारण परम्परा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।	4.4	0.96	87.96	स्वीकृत
2	जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन में वर्धमान ग्रंथागार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।	4.54	0.74	90.86	पूर्णतः स्वीकृत
3	जैन विश्व भारती संस्थान के वर्धमान ग्रंथागार का प्रबंधन एवं कार्यप्रणाली ज्ञान-संवर्धन तथा शोध कार्यों के लिए प्रभावी एवं उपयोगी है।	4.23	0.96	84.59	स्वीकृत
4	जैन विश्व भारती संस्थान का ग्रंथागार जैन धर्म के संरक्षण, संवर्धन एवं ज्ञान-परम्परा के प्रसार में एक प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य करता है।	4.38	0.9	87.66	स्वीकृत
5	ग्रंथागार के उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि का स्तर ग्रंथागार की सेवाओं एवं संसाधनों की उपलब्धता से सकारात्मक रूप से प्रभावित होता है।	4.57	0.78	91.36	पूर्णतः स्वीकृत
6	जैन विश्व भारती संस्थान के ग्रंथागार का नियमित उपयोग करने वाले उपयोगकर्ताओं में जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है।	4.49	0.74	89.84	स्वीकृत

समेकित विवरण (विवरण)— उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अध्ययन की **सभी छह परिकल्पनाएँ स्वीकृत** हुई हैं। इनमें **परिकल्पना–5** को सर्वाधिक समर्थन प्राप्त हुआ, जिसका माध्य **4.57** तथा समर्थन प्रतिशत **91.36%** है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रंथागार की सेवाओं एवं संसाधनों की गुणवत्ता उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि को अत्यधिक प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त **परिकल्पना–2** भी **90.86%** के साथ **पूर्णतः स्वीकृत** हुई, जिससे सिद्ध होता है कि वर्धमान ग्रंथागार जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। शेष परिकल्पनाएँ (1, 3, 4 एवं 6) भी **84% से 90%** के मध्य समर्थन प्राप्त कर **स्वीकृत** हुईं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जैन साहित्य, ग्रंथागार की कार्यप्रणाली, ज्ञान-परम्परा का संरक्षण तथा नियमित ग्रंथागार उपयोग, सभी जैन धर्म के वैचारिक एवं आध्यात्मिक विकास में सकारात्मक योगदान देते हैं। समग्र रूप से यह अध्ययन वर्धमान ग्रंथागार की उपयोगिता, प्रभावशीलता तथा शोध एवं ज्ञान-विस्तार में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका को प्रमाणित करता है। आपके शोध-पत्र के आधार पर निम्न **सम्पूर्ण निष्कर्ष (Overall Conclusion)** शोध के अंत में देने के लिए उपयुक्त रहेगा। यह आपके पूरे अध्ययन का सार प्रस्तुत करता है तथा पीएच.डी./शोध-पत्र के स्तर के अनुरूप है।

वर्धमान ग्रंथागार के भौतिक संसाधन एवं उपलब्ध सुविधाएँ

भवन एवं कक्ष (Infrastructure)	ग्रंथालय सेवाएँ	अध्ययन एवं बैठने की व्यवस्था
स्वतंत्र ग्रंथालय भवन	पुस्तक निर्गमन एवं वापसी	अध्ययन के लिए पर्याप्त टेबल एवं कुर्सियाँ
विशाल प्रवेश कक्ष (Reception)	संदर्भ सेवा, संदर्भ परामर्श	शोधार्थियों के लिए शांत अध्ययन वातावरण
पुस्तक निर्गमन एवं वापसी काउंटर	इंटरनेट / Wi-Fi,	प्राकृतिक एवं कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था
वाचन कक्ष (Reading Hall) - 4	ई-जर्नल, ई-बुक	स्वच्छ एवं हवादार हरित परिसर
संदर्भ अनुभाग (Reference Section)	पांडुलिपि अध्ययन सुविधा	**विद्युत एवं पेयजल सुविधाएँ**
पुस्तक संग्रह कक्ष (Stack Room) - 4	फोटोकॉपी, स्कैनिंग, प्रिंटिंग सुविधा	24×7 विद्युत व्यवस्था
दुर्लभ ग्रंथ एवं पांडुलिपि कक्ष (श्रुत-सन्निधि)	रेफरल सेवा, शोध सहायता सेवा	एयर कंडीशनर (AC), पंखे
पांडुलिपि संरक्षण कक्ष	उपयोगकर्ता मार्गदर्शन	इन्वर्टर, जनरेटर (Power Backup)
कंप्यूटर प्रयोगशाला	नई पुस्तकों का प्रदर्शन	पर्याप्त LED प्रकाश व्यवस्था
पत्र-पत्रिका अनुभाग	समाचार-पत्र एवं पत्रिका सेवा	वाटर कूलर शुद्ध पेयजल
समाचार-पत्र पठन क्षेत्र	डिजिटल लाइब्रेरी सुविधा (D-Space)	**सुरक्षा व्यवस्था**
प्रशासनिक कार्यालय	लाइब्रेरी सदस्यता आईडी कार्ड	CCTV कैमरे
पुस्तक तकनीकी कक्ष	बारकोड आधारित प्रणाली	अग्निशमन यंत्र
स्वच्छ शौचालय	Soul 3.0 / OPAC (LMS)	सुरक्षित पुस्तक भंडारण
दिव्यांगजन हेतु सुविधाएँ	CAS / SDI	प्रवेश नियंत्रण व्यवस्था

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि **जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ स्थित वर्धमान ग्रंथागार** केवल पुस्तकों एवं सूचना संसाधनों का संग्रहालय नहीं है, बल्कि जैन धर्म के **वैचारिक, आध्यात्मिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास** का एक प्रभावशाली केन्द्र है। यह ग्रंथागार जैन आगमों, दुर्लभ पाण्डुलिपियों, प्राकृत, संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य, शोध-प्रबंधों तथा आधुनिक डिजिटल संसाधनों के माध्यम से ज्ञान के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अध्ययन में मिश्रित शोध पद्धति (Mixed Research Method) का उपयोग करते हुए 400 नियमित उपयोगकर्ताओं से प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा तथ्य संकलित किए गए। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा क्रिटिकल रेशियो (C.R.) जैसी सांख्यिकीय तकनीकों द्वारा किया गया, जिससे अध्ययन के निष्कर्ष

वैज्ञानिक एवं विश्वसनीय सिद्ध हुए। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह प्रमाणित हुआ कि अध्ययन की **सभी छह परिकल्पनाएँ स्वीकृत** हुईं। विशेष रूप से यह तथ्य सामने आया कि वर्धमान ग्रंथागार की संग्रह-संपदा, आधुनिक सूचना सेवाएँ, डिजिटल सुविधाएँ, शोध-अनुकूल वातावरण तथा उपयोगकर्ता-केंद्रित सेवाएँ उपयोगकर्ताओं के ज्ञान-विस्तार, अध्ययन-अभिरुचि, नैतिक मूल्यों तथा आध्यात्मिक चेतना पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि का स्तर भी ग्रंथागार की सेवाओं एवं संसाधनों की गुणवत्ता से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित पाया गया। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि ग्रंथागार का नियमित उपयोग करने वाले व्यक्तियों में जैन धर्म के सिद्धान्तों, दर्शन तथा आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति अधिक जागरूकता एवं समझ विकसित होती है। पुरुष एवं महिला उत्तरदाताओं के मध्य ज्ञान स्तर में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर प्राप्त हुआ, किन्तु दोनों वर्गों में जैन धर्म के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यमान पाया गया। समग्र रूप से यह अध्ययन सिद्ध करता है कि **वर्धमान ग्रंथागार पारम्परिक ज्ञान-संपदा एवं आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का सफल समन्वित मॉडल** है। यह ग्रंथागार केवल अध्ययन एवं अनुसंधान को ही प्रोत्साहित नहीं करता, बल्कि जैन ज्ञान-परम्परा के संरक्षण, मूल्यपरक शिक्षा के विकास तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि वर्धमान ग्रंथागार वर्तमान समय में एक आदर्श विशेष ग्रंथालय (Model Special Library) के रूप में स्थापित है, जो भविष्य में ज्ञान-समाज के निर्माण, जैन अध्ययन के विस्तार तथा सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में और अधिक प्रभावी भूमिका निभाने की क्षमता रखता है।

अंतिम निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि **"वर्धमान ग्रंथागार केवल एक पुस्तकालय नहीं, बल्कि जैन ज्ञान, दर्शन, संस्कृति, नैतिकता एवं आध्यात्मिक चेतना का जीवंत केन्द्र है, जो परम्परा और आधुनिकता के समन्वय के माध्यम से समाज, शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में अमूल्य योगदान प्रदान कर रहा है।"**

सुझाव

1. नवीन पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, प्रतियोगी परीक्षाओं, करंट अफेयर्स एवं सामान्य ज्ञान से संबंधित साहित्य का नियमित संग्रह किया जा सकता है।
2. इंटरनेट, वाई-फाई एवं कंप्यूटर आधारित सेवाओं का विस्तार कर आधुनिक तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकती हैं।
3. डिजिटल लाइब्रेरी, ई-बुक, ई-जर्नल एवं अन्य ऑनलाइन सूचना संसाधनों का विस्तार किया जा सकता है।
4. स्मार्ट लाइब्रेरी सेवाएँ जैसे मोबाइल आधारित सेवाएँ, ऑनलाइन सदस्यता, डिजिटल रेफरेंस सेवा एवं रिमोट एक्सेस विकसित किए जा सकते हैं।
5. पुस्तकालय भवन, संग्रहण क्षमता, अलमारियों एवं भौतिक अधोसंरचना का उपयोगकर्ता आवश्यकताओं के अनुसार विकास किया जाए।
6. जैन साहित्य के साथ बहुविषयक (Multidisciplinary) अध्ययन सामग्री का विस्तार किया जाए, ताकि विभिन्न विषयों के शोधार्थियों को लाभ मिल सके।
7. पुस्तक प्रदर्शनियाँ, पठन-प्रेरणा कार्यक्रम, कार्यशालाएँ, व्याख्यानमालाएँ एवं शोध संगोष्ठियाँ नियमित रूप से आयोजित की जा सकती हैं।
8. उपयोगकर्ता फीडबैक प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाकर प्राप्त सुझावों के आधार पर पुस्तकालय सेवाओं में निरंतर सुधार किया जा सकता है।
9. पुस्तकालय एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षणिक विभागों के बीच समन्वय स्थापित कर शोध एवं अकादमिक गतिविधियों को अधिक सशक्त बनाया जा सकता है।

10. जैन विश्व भारती के प्राकृतिक एवं हरित वातावरण में ग्रीन लाइब्रेरी की स्थापना की जाए, जिससे पाठकों को प्रकृति के बीच अध्ययन एवं स्वाध्याय का अवसर प्राप्त हो।
11. देश-विदेश के विद्वानों एवं साधु-संतों के अनुभवों का लाभ विद्यार्थियों तक पहुँचाने हेतु ह्यूमन लाइब्रेरी (Human Library) की अवधारणा विकसित की जा सकती है।
12. पुस्तकालय संग्रह का नियमित मूल्यांकन, अद्यतन (Updating) एवं विषयवार पुनर्संगठन कर विषय अनुक्रमणिका तैयार की जा सकती है।

संदर्भ सूची—

1. आचार्य तुलसी, मेरा जीवन मेरा दर्शन, आदर्श साहित्य मंच प्रकाशन, पृ. सं. 318।
2. मुनि मोहितकुमार, कामधेनु जैन विश्व भारती का इतिहास, जैन विश्व भारती (2012)।
3. कुमार, सुनील, आधुनिक पुस्तकालय एवं तकनीकी, पृ. सं. 5–6।
4. अग्रवाल, वासुदेव शरण, भारतीय संस्कृति का इतिहास, पृ. सं. 3–5।
5. आचार्य महाप्रज्ञ, इक्कीसवीं सदी एवं जैन धर्म (2002), पृ. सं. 5–6।
6. स्वामी बुद्धमल्ल, तेरापंथ का इतिहास, जैन विश्व भारती।
7. आचार्य महाप्रज्ञ, जैन परम्परा का इतिहास, पृ. सं. 78, 125।
8. कुमार, सुनील, आधुनिक पुस्तकालय एवं तकनीकी (2007), पृ. सं. 6–7।
9. जैन विश्व भारती संस्थान, वर्धमान ग्रंथागार परिचय पुस्तिका, लाडनूँ, जैन विश्व भारती संस्थान, पृ. सं. 15, 24।
10. रंगनाथन, एस. आर., Library Administration, पृ. सं. 6–7।
11. अनुसंधान की विधियाँ, के. एच. कपिल, हरी प्रसाद भार्गव, आगरा।
12. मापन एवं मूल्यांकन परीक्षण, डॉ. जयप्रकाश व तिवारी, श्रीराम मेहरा एंड कम्पनी, आगरा।
13. शोध पद्धतियाँ एवं सांख्यिकीय तकनीक, डॉ. एस. सी. जैन, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल।
14. रिसर्च मेथडोलॉजी, वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर।
15. https://www.jvbi.ac.in/index.php?option=com_content&view=article&id=434&Itemid=1016
16. https://www.jvbi.ac.in/index.php?option=com_k2&view=item&id=1255
17. https://www.jvbi.ac.in/index.php?option=com_k2&view=item&id=1247